अध्याय

1

भाषा और साहित्य

प्रेमचन्द (1880-1936) - मुंशी प्रेमचन्द का जन्म बनारस के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। 21 वर्ष की आयु में ही उन्होंने लेखन प्रारंभ कर दिया था। उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की और 1930 में 'हंस' नामक पत्रिका का संपादन[1] व प्रकाशन[2] भी शुरू किया। वह हिन्दी साहित्य के महान लेखक थे। उनके साहित्य का प्रमुख विषय राष्ट्रीय जागरण और समाज सुधार रहा।

बच्चो, क्या आप मुझे पहचानते हैं? शायद नहीं....मैं प्रेमचन्द हूँ। 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'नमक का दारोगा[3]', 'गबन', 'गोदान' जैसी प्रसिद्ध रचनाएँ मैंने ही लिखी हैं। ठीक समझा.... मैं एक लेखक हूँ। आप में से बहुत से बच्चे अवश्य ही बड़े होकर मेरी तरह लेखक बनना या अखबारों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविज़न अथवा फिल्मों के लिए लिखना चाहते होंगे। माध्यम कोई भी हो, लिखने के लिए भाषा पर अधिकार बहुत ज़रूरी है। क्या पता आप में ही कोई बुकर अवार्ड या नोबेल पुरस्कार जीतने वाला छिपा हो!

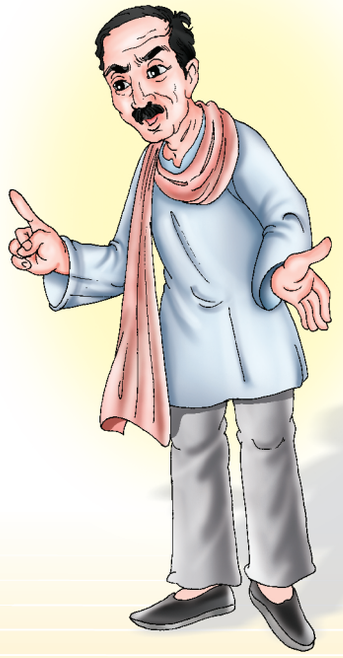

आप जानते हैं

आम आदमी के लिए या एक लेखक के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता क्या होती है?
जीने के लिए - हवा, पेट भरने के लिए - खाना और पानी, और अपनी बात कहने के लिए.....?
बिल्कुल सही! 'भाषा'।

1. संपादन - ठीक करना
2. प्रकाशन - ग्रंथ आदि छपवाकर बेचने एवं प्रचारित करने का व्यवसाय
3. दारोगा - दरोगा

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

ऐन ई॰ क्यू॰ एफ॰ आई॰ रिसर्च इनीशिएटिव

इससे पता चलता है कि आप भाषा शब्द से पूर्व-परिचित हैं। इस अध्याय में आज हम भाषा के बारे में ही विस्तार से जानेंगे, परन्तु पहले कोई ऐसी चार दैनिक क्रियाएँ बताइए जो आप भाषा की सहायता से करते हैं। दिए गए प्रश्न का उत्तर अपनी कार्यपुस्तिका में लिखिए।

जानिए

भाषा बहुत महत्वपूर्ण है। हम सब समाज में रहते हैं। हम अपनी आवश्यकताओं को बोलकर और लिखकर बताते हैं। दूसरे हमारी बात को समझकर उन्हें पूरा करते हैं। भाषा के बिना हमारा काम नही चल सकता। संकेतों से कोई दूसरा अर्थ भी निकल सकता है किन्तु एक लेखक बनने के लिए संकेत नही, भाषा-ज्ञान आवश्यक है।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों को बोलकर और लिखकर प्रकट करते हैं तथा दूसरों के मन के भावों को पढ़कर और सुनकर समझते हैं।

इस परिभाषा में चार तत्व प्रमुख हैं जो भाषा के दो प्रमुख रूपों की ओर भी संकेत कर रहे हैं। ध्यान दें -

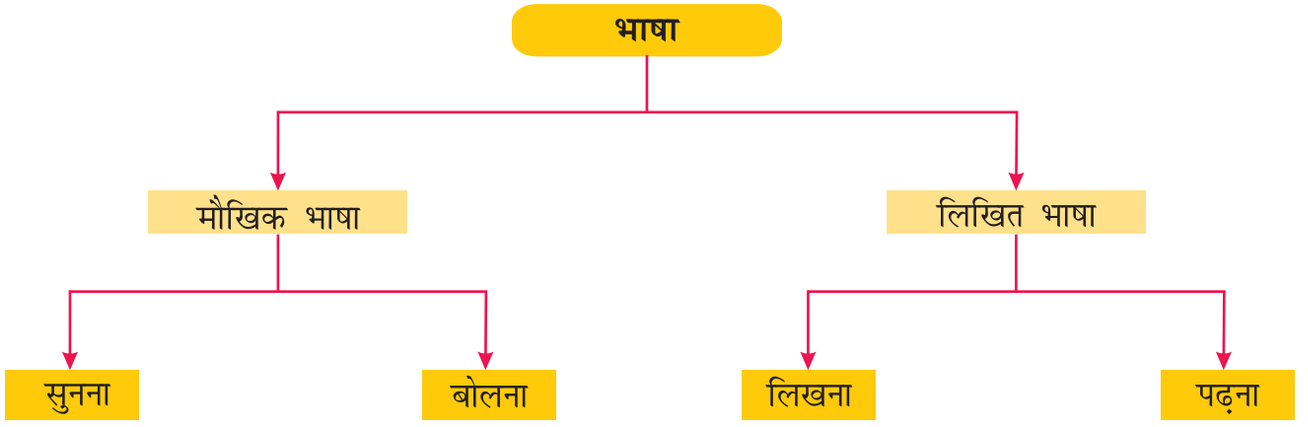

मातृभाषा

अरे! हम कक्षा में बैठे क्यों हैं? चलो, हम सभी भारत-दर्शन के लिए चलते हैं। आप लोग साथ में अपनी कलम और कागज़ भी ले लें। आखिर लेखक कलम का सिपाही ही तो होता है।

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

सबसे पहले चलते हैं उत्तर प्रदेश। यहीं मेरा जन्म हुआ था। क्या आप जानते हैं इस प्रदेश के लोग क्या भाषा बोलते हैं? जी हाँ! 'हिन्दी'। यही मेरी मातृभाषा है। यह वह भाषा है जो हम सबसे पहले स्कूल-कॉलेजों में न सीखकर अपने घर-परिवार में सीखते हैं और घरेलू बातचीत में इसका प्रयोग करते हैं।

प्रेमचंद – **यह आगे कौन चला आ रहा है? यह तो सुब्रमण्यम भारती हैं – तमिल भाषा के प्रसिद्ध लेखक।**

सुब्रमण्यम भारती – वणक्कम्, वणक्कम्।

बच्चे – **ये क्या बोल रहे हैं? हम तो कुछ समझ ही नहीं पाए?**

प्रेमचंद – **स्वागत श्रीमान।**

(बच्चों से) – **ये आपका स्वागत कर रहे हैं। इनका जन्म तमिलनाडु में हुआ, इसलिए इनकी मातृभाषा तमिल है। इसी प्रकार कर्नाटक में जन्मे लोगों की मातृभाषा 'कन्नड़', आंध्र प्रदेश में जन्मे लोगों की 'तेलुगु' और बंगाल के लोगों की 'बंगला' होगी।**

माँ तथा परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बोली जाने वाली जिस भाषा से बच्चे का सबसे पहले परिचय होता है, उसे ही उसकी मातृभाषा कहते हैं।

कीजिए

अब आप अलग-अलग मातृभाषाओं का ज्ञान रखने वाले अपने किन्हीं पाँच मित्रों से उनके एक प्रसिद्ध त्योहार और खाद्य व्यंजन का नाम पूछिए और अपनी कार्यपुस्तिका में लिखिए।

आपने जाना

- घर-परिवार में बोली जाने वाली भाषा मातृभाषा कहलाती है।

जानिए

राष्ट्रभाषा

बच्चो, आइए अब राष्ट्रभाषा हिन्दी के विषय में जानते हैं।

आपने देखा, आप जैसे-जैसे भारत के अन्य प्रदेशों की ओर बढ़ रहें हैं, कितनी अलग-अलग भाषाएँ सुनने को मिल रही हैं। पर आप सभी से हिन्दी में बात कर रहे हैं। सभी आपकी बात समझ भी रहे हैं और आपसे हिन्दी में बात भी कर रहे हैं, क्योंकि हिन्दी हमारे देश और मातृभूमि की राष्ट्रभाषा है। इसकी सरलता व सहजता के कारण इसे उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक हर भारतवासी समझता है और इसमें वह अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। राष्ट्रभाषा के रूप में यह देश को एक सूत्र में बाँधती है। अब अनेक विदेशी भी इसे सीख रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय जगत में यह लोकप्रिय होती जा रही है।

देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं।

कीजिए

अब आप किन्हीं तीन ऐसे न्यूज चैनलों और न्यूज रीडरों का नाम अपनी कार्यपुस्तिका में लिखिए जो राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रयोग करते हों।

आपने जाना

- राष्ट्रभाषा देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है।

जानिए

साहित्य और व्याकरण

मैं जब अपनी कहानियाँ या उपन्यास लिखता हूँ तो इस बात का ध्यान रखता हूँ कि उस आम आदमी के विचार या भाव सशक्त भाषा में समाज के सामने रखूँ जो अपनी बात कहने में स्वयं समर्थ नहीं है। साथ ही वह बात ऐसी होनी चाहिए जिससे समाज को प्रेरणा, प्रसन्नता या दिशा-निर्देश मिल सके। मेरी दृष्टि में यही साहित्य है।

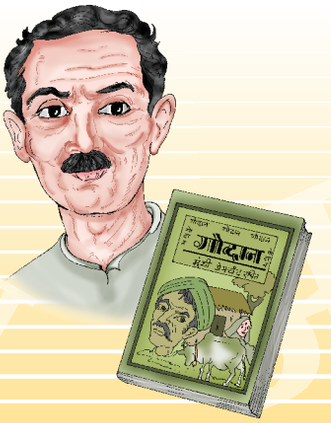

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

जो भाव या विचार रोचक ढंग से समाज के हित को ध्यान में रखकर प्रकट किए जाते हैं, वही साहित्य कहलाते हैं।

इस तरह आपने देखा भाषा और साहित्य का कितना सीधा और गहरा संबंध है। पर एक और कड़ी है जो इन दोनों को जोड़ती है और वह है व्याकरण।

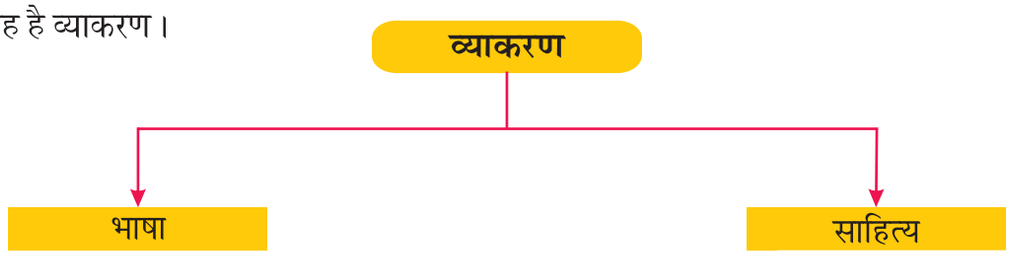

व्याकरण भाषा को व्यवस्था[1] देता है अन्यथा भाषा निरर्थक[2] ध्वनियों का समूह बन सकती है। अगर मैं आपसे कहूँ *'बहुत के हैं मैंने लिखी सी बच्चों कहानियाँ लिए।'* तो क्या आप कुछ भी समझे?...नहीं न?...यदि यही बात व्याकरण की व्यवस्था के अनुसार कही जाए तो इसका अर्थ एकदम समझ में आ जाएगा। जरा इसे ठीक क्रम में लिखकर दिखाइए –

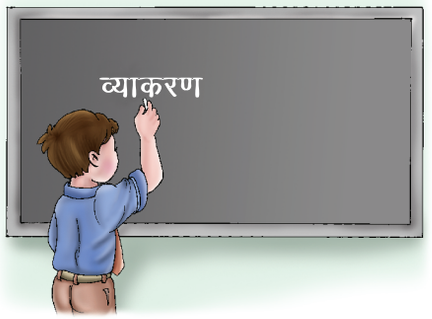

भाषा को संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, लिंग, वचन आदि के व्यवस्थित क्रम में लिखना ही व्याकरण है।

यदि भाषा को इस व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है तो भाषा अर्थवान व शुद्ध कहलाती है अन्यथा नहीं। जैसे खीर बनाने में दूध, चावल, चीनी आदि की व्यवस्था होती है तभी खीर बनती है अन्यथा नहीं।

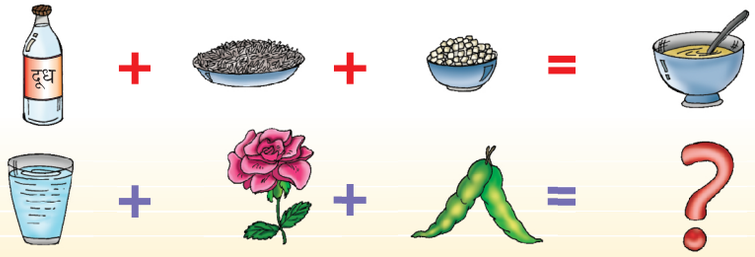

अब आप समझ गए होंगे कि जीवन की हर चीज़ में व्यवस्था है। इसी तरह भाषा में भी व्यवस्था अनिवार्य है तभी भाषा का मौखिक व लिखित रूप जीवित रहता है और साहित्य का निर्माण होता है। एक अच्छे साहित्यकार का उद्देश्य भी मात्र भाषाभिव्यक्ति ही नहीं होता, बल्कि दोष रहित, सहज, सरल शब्दों में प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति होता है। व्याकरण ही उसे भाषा का यह प्रवाह और व्यवस्था देता है।

1. व्यवस्था - ढंग, तरीका
2. निरर्थक - व्यर्थ

कीजिए

अब आप लोग अपनी कागज़ कलम निकालिए और अपने देश के विषय में चार पँक्तियों की कोई कविता अपनी कार्यपुस्तिका में लिखिए।

आपने जाना

- साहित्य-रचना समाज के हित में की जाती है।
- व्याकरण भाषा को व्यवस्था देता है।

याद रखने योग्य

1

2

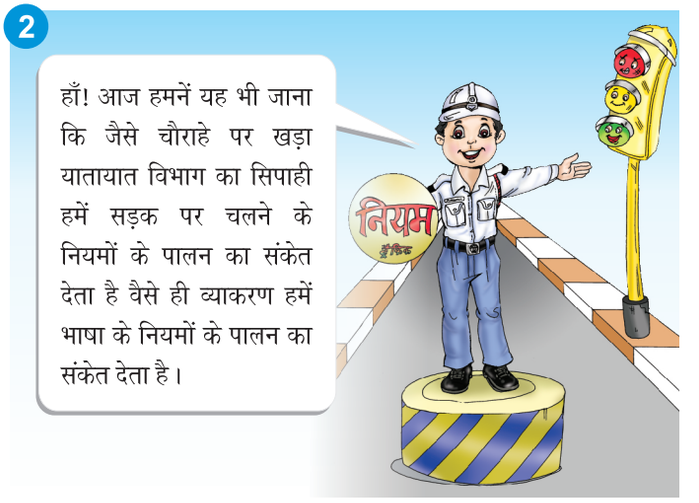

3

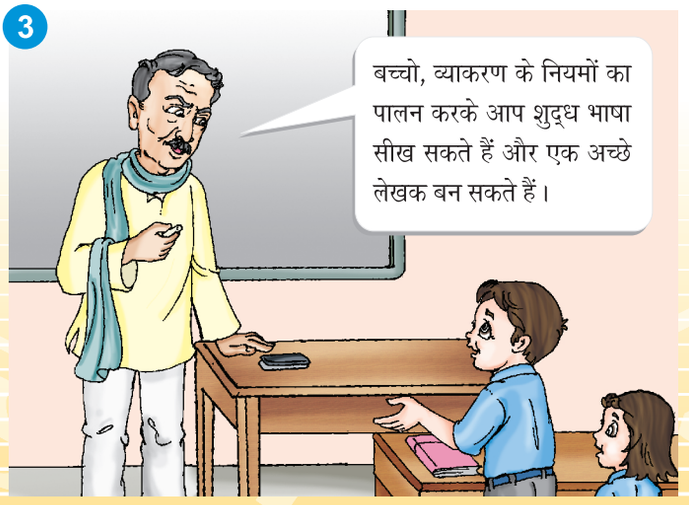

4

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें -

1. भाषा मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है?

2. भाषा के कितने अंग हैं? स्पष्ट करें।

3. मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को परिभाषित करें।

4. हिंदी भाषा में आने वाले पाँच उर्दू शब्दों का उदाहरण दें।

5. अर्थहीन शब्दों से सार्थक शब्द बनाएँ -

   (क) ग रि क ना

   (ख) म स र्थ

   (ग) प्रि लो य क

   (घ) वि ता वि ध

   (ङ) य नि म

   (च) ण ट र या क

   (छ) षा भा मा तृ

6. यदि भाषा न होती तो मनुष्य अपने विचार कैसे व्यक्त कर पाता?

7. क्या सभी मनुष्यों की भाषा एक जैसी है? यदि नही तो अंतर के दो कारण सोचकर बताइए?

8. अव्यवस्थित वाक्य रचना को व्यवस्थित करें -

   (क) पढ़ना है कहानियाँ बहुत मुझे अच्छा लगता।

   (ख) साहित्य के थे श्रेष्ठ रवींद्रनाथ टैगोर लेखक बंगला।

   (ग) लिखती माँ सुंदर है कविताएँ मेरी।

   (घ) रचनाएँ स्कूल हैं की बच्चों पत्रिका की में छपतीं।

(ङ) मनाया जाता सितंबर को 14 दिवस हिंदी है।

(च) थे लेखक महान प्रेमचंद हिंदी मुंशी भाषा के ।

9. तकनीक से जुड़े ऐसे पाँच शब्द लिखें, जो हिंदी भाषा का अंग बन चुके हैं।

शिक्षार्थी हेतु

परियोजना कार्य - 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। आइए, इस दिवस की तैयारियाँ करते हुए आप हिंदी भाषा के महान लेखक मुंशी प्रेमचन्द की बाल कहानियों का अध्ययन करें। अब उन कहानियों से बच्चों के विषय में लेखक क्या सोचता है, इस बात पर प्रकाश डालते हुए एक पटकथा तैयार करें और उसका अभिनय भी करें। दर्शकों की प्रतिक्रिया एकत्र करें। ये आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगी।

सहायक सामग्री - कागज़, कलम, शब्दकोश

संदर्भ साधन - इंटरनेट साइट्स

http://munshi-premchand.blogspot.com/
http://en.wikipedia.org/wiki/Munshi_Premchand
http://www.iloveindia.com/indian-heroes/premchand.html
http://www.bharatdarshan.co.nz/stories/vardan.htm
hi.wikipedia.org/wiki/
http://en.wikipedia.org/wiki/Hindi-Urdu_grammar

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया